

(iv) विलोमशब्द - विलोम का अर्थ होता है 'विपरीत'

अनुलोम - विलोम/प्रतिलोप, लोस - लख, गुप्त - प्रकट,

उषा - संध्या, उदय - अस्त, आदि - अंत

मोक्ष - बंधन, घात - प्रतिघात, वास्तविक - अवास्तविक,

अतिवृष्टि - अनावृष्टि, सापेक्ष - निरपेक्ष, समास - व्यास,

संधि - विच्छेद/विग्रह, विधवा - सधवा, उर्वरा - वंध्य

उपजाऊ - बैजर, मानवता - दानवता, नेकी - बंदी,
 खरा - खोला, आकर्षण - विकर्षण, आस्तिक - नास्तिक,
 जंगम - स्थावर, उपमान - उपमेय, उपमेय - अनुपमेय,
 अतिथि - आतिथेय, अभिशाप - वरदान, रुकाग्र - चंचल,
 हर्ष - विषाद, अथ - इति, प्राचीन - अर्वाचीन,
 कृतज्ञ - कृतघ्न, अज्ञ - विज्ञ, अभिज्ञ - अनभिज्ञ
 (अनजान) (जानकार) (जानकार) (अनजान)

સંસાર - અસાર, આરોહ - અવરોહ, આરોપ - પ્રત્યારોપ,
 આસ્થા - અનાસ્થા, ઉન્મુખ - વિમુખ, અસીમ - સસીમ,
 ઔચિત્ય - અનોચિત્ય, ક્રય - વિક્રય, અધિત્યકા - ઉપત્યકા,
 અતીત - વર્તમાન, જંગલી - પાલતૂ, યુસ્ત - ઢીલા,
 મંગલકારી - અમંગલકારી, વૃદ્ધિ - હાસ, સુખ - દુઃખ,
 બાઢ - સૂઝા, પુષ્ટ - અપુષ્ટ, ધૂપ - દોંહ

⑤ युग्म/समानोच्चारित शब्द -

वे शब्द जो उच्चारण में तो समान होते हैं, लेकिन अर्थ अलग-अलग होता है, युग्म/समानोच्चारित शब्द कुछ ऐसे हैं -

जैसे - अनल - आग, अंश - हिस्सा, शहर - नगर,
अनिल - हवा, अंस - कुंघा, सहर - सेवेरा,

विपण - बाजार, तरणि - सूर्य, सुत - पुत्र,
 विपणि - दुकान, तरणी - नाव, सुता - पुत्री,
 विपणी - दुकानदार, तरुणी - युवती, सूत - धागा,
 पाणि - हाथ, परिक्षा - कीचड़, प्रवाह - बहना,
 पानी - जल, परीक्षा - इम्तिहान, परवाह - चिन्ता,
 फण - सौँप का फण, निशा - चिह्न, प्रसाद - कृपा,
 फन - कला, निसा - शंङा, प्रासाद - महल

दारु - भकड़ी, दिवा - दिन, देव - देवता,

दारु - शराब, दीवा - दीपक, दैव - भाग्य.

नियत - निश्चित.

ग्रह - नक्षत्र आदि

नीयत - मंशा/श्रादा.

गृह - घर, कृत - रचित

नियति - भाग्य.

उद्यत - तैयार कृति - रचना

कलि - कलियुग,

उद्धत - उद्दण्ड कृती - रचनाकार

कली - अधखिला फूल,

अरि - शत्रु, अरी - स्त्री के लिए सम्बोधन

अंगना - स्त्री, अलि - अमर, आदि - प्रारम्भ,
 अँगना - घर का आँगन, अमी - सखी, आदी - अभ्यस्त,
 अणु - कण, दंसु - डंक, जगत - संसार
 अनु - एक उपसर्ग, दंश - चुभन, जगत - कुझोंकी मुँडेर
 असन - भोजन उपेक्षा - निरादार
 आसन - बैठने का स्थान अपेक्षा - आवश्यकता / तुलना